3, 71, 438
प्रकाशन संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली
भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

मेरे खिलौने

कितने सुंदर और सलोने, देखो मेरे नए खिलौने।
यह देखो फुर्तीला घोड़ा, नहीं चाहिए इसको कोड़ा।
चाबी से चलता है सरपट, और लौट कर आता झटपट।
मत देखो यह बिल्ली आई, आ पंजों में गेंद दबाई।
जब भी इसकी पूँछ घुमाऊँ, यह कहती है म्याऊँ – म्याऊँ।
कंधे पर बंदूक उठाए, यह लो वीर सिपाही आए।
ताकत वाले हिम्मत वाले, ये हैं इन सबके रखवाले।